साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 10
September 2017

आजकल मौसम क्यों शर्द लगता है

बबिता देवी

आजकल मौसम क्यों शर्द लगता है
हर किसी के आँखों में दर्द दिखता है
ये मौसम का असर है
या दोष मेरी नजर का है
हर चेहरें पे मायूसी है
हर तरफ एक उदासी है
धरती दबी बेवस लगाती है
असमान सुबह शाम रोता लगता है
ये मौसम का असर है
या दोष मेरी नजर का है
जाने क्यों मुझें महसूस नहीं होता
कलियों का खिलना, फूलों का मुस्कुराना
हवाओं का चलना, नदी का बहना
पर मुझे नजर आता है
और आखें क्यों देखता है
फूलों का मुरझाना, कलियों की बेवसी
शर्द हवाओं की दर्द और नदी की ख़ामोशी
ये मौसम का असर है
या दोष मेरी नजर का है
क्यों देखता हूँ, क्यों नहीं दिखता है
सागरकी सतह पे हलचल
क्यों शांत बैठा हैं साहिल
समुन्द्र में तूफान, तूफान में किश्ती
किनारें बैठें लोग, लोगों की मस्ती
सागर में उठतें लहरें
दूर तक फैली किनारें
ये मौसम का असर है
या दोष मेरी नजर का है
शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'